संगतिन–यात्रा के बारे में

संगतिन–यात्रा उत्तर प्रदेश के सीतापुर ज़िले में काम करने वाली सात औरतों की ज़िन्दगी का सफ़रनामा है। सीतापुर के ग्रामीण इलाक़ों में दलित और शोषित महिलाओं के हक़ के लिये लड़ती ये ग्राम–स्तरीय महिला–कार्यकर्ता *संगतिन* नामक महिला संगठन से जुड़ी हुई हैं। यह भी कह सकते हैं कि नौ लेखिकाओं की क़लम से पिरोया यह सफ़रनामा सात औरतों की निजी डायरियों पर आधारित है। इसमें उन्होंने अपने बचपन, जवानी, शादी–ब्याह और मातृत्व की देहरी से लेकर गाँवों में किये अपने काम तथा उस काम से जुड़े हुए सपनों आदि को बहुत मार्मिकता से लिपिबद्ध किया है।

परन्तु इस किताब का मक़सद इन सात ज़िन्दगियों की कहानी सुनाना भर नहीं है। इन कहानियों के माध्यम से लेखिकाओं ने बार–बार हमारा ध्यान उन सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक ढाँचों और प्रक्रियाओं की ओर ले जाने की कोशिश की है जो लिंग–भेद से जुड़े संघर्षों को जाति, वर्ग, मज़हबी भेदभाव और छुआछूत की ज़ंजीरों में जकड़े रहती हैं। इसके साथ ही इसमें उन जटिलताओं और दिक्क़तों को भी स्वर देने की भरसक कोशिश हुई है, जो आज के दौर में एनजीओ की दुनिया में गहरे तक पैठ गई हैं, लेकिन जिन पर खुलकर बातचीत करने के लिये ग्राम–स्तरीय कार्यकर्ताओं को बहुत कम मंच मिलते हैं। मंच मिलते भी हैं, तो खुलकर कहने–बोलने का साहस जुटाना कठिन होता है।

ललित और वैचारिक लेखन के बीच की खाई को पाटते हुए अपनी जुदा–जुदा दुनिया में साँस लेती नौ लेखिकाओं ने जिस अनूठी–सामूहिक प्रक्रिया से गुज़र कर इस प्रयास को साँचे में ढाला या एक माला की तरह पिरोया है, उसका सिलसिलेवार बयान इस किताब और चिन्तन को एक नया आयाम और गहराई देता है।

संगतिन के बारे में

अवधी बोली में पक्की सहेली को *संगतिन* कहते हैं। *संगतिन* अपनी साथी के सुख–दुख में 'एक प्राण, दो शरीर' की तरह जीती और काम करती है। सीतापुर ज़िले में 1998 से कार्यरत *संगतिन* ग्रामीण महिलाओं को जागरूक करते तथा किशोरियों और बच्चों को साथ लेते हुए, जनता के हक़–हुक़ूक़ और सामाजिक, राजनैतिक एवं आर्थिक–सशक्तीकरण के लिए प्रयासरत है।

आज के दौर में जाति के राजनीतिकरण और राजनीति के एनजीओकरण ने महिला मुददों पर काम करने वाले छोटे संगठनों के लिये बड़ी और बेहद जटिल चुनौतियाँ खड़ी कर दी हैं। लिंग, जाति और वर्ग के भेदों को जोड़ने की बात जगह–जगह उठ रही है, लेकिन पारदर्शिता, सामूहिकता, समता–समानता, और विकेन्द्रीकरण जैसे विचारों को सच्चे मायनों में ज़मीनी काम में तब्दील कर पाना बहुत कठिन हो रहा है। *संगतिन* शिक्षा और जागरूकता से जुड़े संगठनात्मक कार्य को आगे बढ़ाने के लिये अपने ज़मीनी काम को निरंतर जाँचते–परखते हुए, अपनी सोच–समझ और चिन्तन में विस्तार ला

रही है। *संगतिन* अपने लक्ष्यों को हासिल करने की प्रेरणा ऐसे संगठनों और व्यक्तियों से पा रही है, जो इन सारी चुनौतियों के बावजूद पूरे दम से सामाजिक बदलाव लाने के काम में डूबे हुए हैं।

इसी पुस्तक में से...

"....हमारा दस्तावेज़ीकरण अनुदान–दाताओं के मन–माफ़िक निखर कर आये इसके लिये तो नित नई कार्यशालाएँ आयोजित होती हैं। परन्तु हमें यह समझ बनाने के लिये बहुत ही कम जगह व साधन दिये जाते हैं कि जिस भूमण्डलीकरण और विश्व व्यापार संगठन के बारे में आये दिन अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर वार्ताएँ होती हैं, जिन किसानों की आत्महत्याओं की ख़बरें बढ़ती चली जा रही हैं, जिस पानी के मुद्दे पर रोज बहसें होती हैं, इन सब सामाजिक और राजनैतिक प्रक्रियाओं का हमारे गाँवों की महिलाओं के खिलाफ़ हो रही हिंसा से क्या रिश्ता है?"

"....केवल महिला–पुरूष के बीच के फ़र्क़ों पर बात करने से क्या समाज में बराबरी आ जाएगी? जब लिंग–भेद के रूप को जाति और वर्ग–भेद से जोड़े बिना किसी भी परिप्रेक्ष्य में जाना ही नहीं जा सकता, तब अपनी ही संस्थाओं में वर्ग–भेद पर सवाल न उठा पाना हमारे काम को एक ऐसे जीव का आकार दे देता है, जिसके दिखाने के दाँत कोई और होते हैं और खाने के दाँत कोई और!"

"....सात ज़िन्दगियों की दास्तानों को सुनते–सुनाते वक़्त हर बार यही लगा कि बीवी–बहू तो ससुराल के भीतर एक ऐसी दासी बनकर दाख़िल होती है, जिसे ससुराल वाले जब चाहें इज़्ज़त–आबरू के नाम पर परदे में कर दें और जब मन हो, तब दुनिया के सामने मार–पीटकर नंगा कर दें। . . . पूरी ज़िन्दगी में उसके हिस्से आता है, तो बस काम और केवल काम। उसके अलावा अगर वह कुछ हासिल कर पाती है, तो समाज की वजह से नहीं बल्कि समाज से लड़ कर––सिर्फ़ अपने दम पर...."

000

संगतिन–यात्रा

सात ज़िन्दगियों में लिपटा नारी–विमर्श

संगतिन लेखक समूह

अनुपमलता
ऋचा नागर
ऋचा सिंह
रामशीला
रेशमा अन्सारी
विभा बाजपेयी
शशि वैश्य
शशिबाला
सुरबाला

कॉपीराइट संगतिन

आवरण

अन्जनी सोमवंशी

प्रकाशक

संगतिन
शिवपुरी कॉलोनी,
सीतापुर (उत्तर प्रदेश) 261001
ईमेलः sangtin002@gmail.com

पहला संस्करण

2004

वेब संस्करण

2009

सीतापुर ज़िले की
उन ग्रामीण महिलाओं को
समर्पित
जिनके साथ जुड़कर
हमें
काम करने की हिम्मत और प्रेरणा मिली

अपनी बात

तमाम जोखिम उठाकर बहुत मेहनत–मशक्क़त से तैयार किया गया यह सामूहिक सफ़रनामा आपके हाथों में सौंपते वक़्त हम ऐसा सुकून महसूस कर रहे हैं, जैसा हमने ज़िन्दगी में पहले कभी नहीं किया।

इस *संगतिन–यात्रा* में नौ लोगों की सामूहिक–आवाज़ एक कोरस के रूप में उभरती है। हममें से एक की आवाज़ में दूसरी का सुर या तीसरी–चौथी आवाज़ जहाँ–तहाँ सहसा मिलकर हमारे गीत–संगीत को बिल्कुल नया और अनोखा अन्दाज़ देने लगती है। फिर भी हम यहाँ जो भी कह रहे हैं उसे सिर्फ़ एक संयुक्त आवाज़ के रुप में सुना जा सकता है–– एक ऐसी आवाज़ जिसमें से किसी एक, दो या बाक़ी और आवाज़ों को जुदा करके सुना ही नहीं जा सकता।

यह हमारी अपनी कहन और हमारा आत्मालोचन है, जिसे हम आपके सुपुर्द कर रहे हैं। हमारे लिये तो यह साहित्य का हिस्सा उसी तरह है जैसे कविता या कहानी।

हम उम्मीद करते हैं कि यह किताब महिला–अध्ययन के विद्यार्थियों तथा एनजीओ–जगत से जुड़े तमाम लोगों के लिये उपयोगी और विचारोत्तेजक साबित होगी। अपनी सामूहिक–प्रकिया को उजागर करते हुए हमने जिस तरह निजी डायरियों का विवेचन और विश्लेषण किया है, वह महत्वपूर्ण–मंथन और सामाजिक–अध्ययन के रूप में सामाजिक–विज्ञान के अनेक शोधार्थियों को भी बाँधेगा, ऐसा हमारा विश्वास है।

हम आभारी हैं उन सारे साथियों और संस्थाओं के––ख़ासकर महिला समाख्या के––जिनके लम्बे साथ ने हमें इस किताब को लिखने की सोच, दृष्टि और ताक़त दी। पुस्तक के पाठ–संशोधन और प्रेस–कॉपी को अन्तिम रूप देने में बन्धु कुशावर्ती ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। खजान सिंह ने हमें अपनी बहुमूल्य प्रतिक्रिया और सुझाव दिये, और नरेन्द्र कुमार वर्मा ने समय–समय पर टंकण में मदद की। इन सबके हम बेहद शुक्रगुज़ार हैं।

ऋचा नागर यूनिवर्सिटी ऑफ मिनिसोटा की आभारी हैं, जहाँ से मिले शोधावकाश और आर्थिक–सहयोग के ज़रिये इस सामूहिक–प्रयास का हर चरण सम्पन्न हो सका।

हमारे बच्चे––अनुराग, अनुराधा, ऋचू, कीर्ति, ख़ुशनुमा, नीलम, पार्थ, पुष्कर, पूजा, बिपिन, मनु, मधुकर, मेधा, मोहम्मद ज़ीशान, मोहम्मद शादाब, मोहम्मद शाहिद, रहनुमा, वर्तिका, शाहिना, सचिन और

सार्थक––कई दिनों से लेकर कई महीनों तक हमारे बिना तो रहे ही, साथ में एक–दूसरे का और हमारा सहारा भी बने। अपना अशेष धन्यवाद हम अपनी इन्हीं बिटियाओं और बेटों को ज्ञापित करते हैं; क्योंकि हमारे जिस समय, शक्ति और ध्यान पर पहला अधिकार इनका बनता था, उसी में से एक बहुत बड़ा हिस्सा निकालकर हमने इस काम को पूरा किया है।

किताब आपके हाथ में है। आपकी प्रतिक्रिया का हमें बेसब्री से इन्तज़ार रहेगा।

–– संगतिन लेखक समूह

क्रम

एक सामूहिक–प्रयास की शुरुआत

छोटा–सा बचपन

बाबुल की गलियों से आँचल की नमियों तकः कितना लम्बा सफ़र!

क़ैद–दर–क़ैदः चहारदीवारियों से मानसिकताओं तक छिड़ी जंग

टूटते पिँजरे, नये आसमान

एनजीओकरण की चुनौतियाँ और *संगतिन* के सपने